Dictation 23.

A tale for a rainy night; part 2.

प्रभु - बच्चों, सवा दस बज रहे हैं। तुम दोनों को सो जाना चाहिए।
गौतम - नहीं। हम पन्द्रह मिनट कहानी सुनकर गुज़ारेंगे। मगर अब की बार कहानी पूरी कीजिएगा। रजनी बाथरूम में घुसी थी नहाने के लिए। लीजिए, आ गई। रजनी, क्या तुम्हें कहानी सुननी है?
प्रभु - ठीक है। शुरु करता हूँ। तो फिर मैंने उस आदमी से कहा, "कृपा करके थोड़ी देर बैठिए। मैं आपकी हिस्ट्री निकालता हूँ।" मैं मुड़कर दराज़ की तरफ़ गया और सोचने लगा, मुझे पास वाले डॉक्टर को बुलाना चाहिए। मगर घड़ी देखी तो आठ बजने में पाँच मिनट बाक़ी थे। उन जंगल के अस्पतालों में शिफ़्ट पूरा होते ही डॉक्टर निकल लेते हैं। रातवाले डाक्टर तब तक पहुँचे नहीं थे। मुझे गुस्सा आया – नर्स को स्टेशन छोड़कर जाने से पहले मुझसे बात करनी चाहिए थी। आठ बजे घड़ी बजने लगी। और तभी बिजली चली गई। वह शख़्स धीमी आवाज़ में कुछ कह रहा था। मैंने जानबूझ कर उसकी ओर नहीं देखा। वह बोला – "डॉक्टर साहब, मैंने आपकी दवाई ली। आपने कहा था कि शराब मत पीना। मुझे आपका कहना मानना चाहिए था। मगर मैंने उस रात को बहुत पिया। घर जाते वक़्त मैं रेलगाड़ी के नीचे आ गया।" उसी वक़्त मैंने अलमारी पर एक साया देखा। मैं जल्दी से मुड़ा, और ज़ोर से चिल्लाया – मुझे नहीं मालूम कि तुम कौन हो या क्या चाहते हो। मेरा तुमसे कोई लेना-देना नहीं है। बारीश बंद हो गई थी, और चाँद निकल आया था। लेकिन मुझे कमरे में कोई नहीं दिखाई दिया। मैंने अपने नज़दीक किसी का चेहरा महसूस किया। फिर सोचना क्या था? ज़ोर से उसे दे मारा, और दौड़ना शुरु किया। पीछे से कोई मुझे दर्द भरी आवाज़ में पुकार रहा था – आपको मुझे माफ़ करना ही पड़ेगा! डॉक्टर साहब, आप मेरी बात सुन रहे हैं कि नहीं? हाय मेरा नाक...। मगर मैं दौड़ता ही रहा, एकबार भी मुड़कर नहीं देखा।

***

Prabhu: Children, it is a quarter past ten. You should both go to bed.
Gautam: No! We will spend fifteen minutes listening to a story. But please finish the story this time. Rajni had gone into the bathroom to wash. There she comes. Rajni, do you want to listen to a story? ('Do you have to listen to a story?' Implication: 'don't you?')
Prabhu: All right; I'll begin. So I said to the man, "Kindly sit for a while. I'll get your history out." I turned and went towards the drawers, and began to think: I should call the doctor next door. But when I looked at the clock, it showed five minutes to eight. In those jungle hospitals, doctors leave as soon as their shifts end. The doctors on the night shift hadn't yet arrived. I was angry; the nurse should have spoken to me before she left the station. At 8 o'clock, the clock began to chime. At that very [moment], the lights went

out. The person was saying something in a low voice. I deliberately did not look in his direction. He said: “Doctor sahib, I took your medicine. You had told me not to drink liquor. I should have listened to you. But that night I drank a lot. On my way home, I fell under a train.” At this moment, I saw a shadow on the closet. I turned quickly, and shouted, “I don’t know who you are [or] what you want. I have nothing to do with you.” It had stopped raining; the moon had come out. But there was no one to be seen in the room. I felt somebody’s face close to myself. What was there to think about? I hit him with force, and began to run. From behind me, someone called out in a voice filled with pain, “You have to forgive me! Doctor sahib, are you listening to me? Ah, my nose…” But I continued to run; I did not turn around even once.